Purva Mimaansa
A Multi-discipinary Bi-annual Research Journal
(Double Blind Peer Reviewed)

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में कृषि–व्यवस्था एवं किसान

दीपा कुमारी

नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में मानव जीवन के सभी पक्षों पर गहन विचार हुआ है। ग्रामीण–जीवन को भी गहन रूप से विश्लेषित किया गया है। उनके अध्ययन का क्षेत्र वास्तव में ऐतिहासिक राज–व्यवस्थाऐं ही रही हैं, जिनका विश्लेषण करते–करते कोहली वास्तव में समकालीन मानव जीवन के सभी पक्षों को भी तौलते हैं। कोहली के उपन्यासों में कृषि एवं किसान के जीवन को बार–बार अध्ययन के विषय के रूप में उठाया गया है। उनके लगभग सभी अध्ययनों में कृषि एवं किसान का वर्णन किसी न किसी रूप में अवश्य हुआ है। कोहली उनके जीवन में रोजगार, इससे सम्बंधित शिक्षा, अर्थव्यवस्था और उसमें उनके शोषण के साधनों पर गहन शोध के आधार पर अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके अलावा आर्थिक वर्ग–भेद एवं बाल–श्रम जैसी समस्याओं पर उनका विश्लेषण समकालीन प्रभावों को संजीदा कर देता है।

नरेन्द्र कोहली हिंदी के प्रख्यात विद्वान हैं। उनका जन्म बिट्रिश कालीन पंजाब के स्यालकोट में 06 जनवरी 1940 को हुआ। भारत के विभाजन के बाद वे जमशेदपुर आकर बसे। तथा यही से उन्होने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। कोहली जी ने दिल्ली विश्वविधालय के रामजस महाविधालय से 1963 में हिंदी मे एम.ए. किया। उन्होने दिल्ली विश्वविधालय से ही पी. एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। डी.ए.वी. सांध्य कालीन कॉलेज में असिस्टेंट लैक्चरर के रूप में शिक्षा का व्यवसाय आरम्भ किया। बाद में वे मोतीलाल नेहरू कॉलेज में लैक्चरर के रूप में स्थानान्तरित हो गए। बाद में पूर्णकालिक लेखक बनने के लिए यही से नरेन्द्र कोहली ने एच्छिक सेवानिवृति ले ली। आज समकालीन हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में नरेन्द्र कोहली एक स्थापित नाम हैं।

नरेन्द्र कोहली के साहित्य में उपन्यासों का सबसे ज्यादा महत्व है। वे आरम्भ से ही उपन्यास–लेखन के प्रति कटिबद्ध थे। उनके उपन्यासों में ऐतिहासिक एवं पौराणिक विषयों को बड़ी गम्भीरता के साथ उठाया गया है। अन्य उपन्यासों के अलावा कोहली ने राम कथा आधारीत उपन्यास–माला, कृष्ण–कथा एवं महाभारत पर आधारित उपन्यासों की भी रचना की। उन्होने इस बात का तो ध्यान रखा ही है कि इन पुरातन कथाओं की मौलिकता बनी रहे, साथ में उन्होने समकालीन समस्याओं को समझने के लिए इनका आधार–ग्रन्थों के रूप में भी प्रयोग किया है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो उन्होने समकालीन सामाजिक परिस्थितियों को अपने उपन्यासों में तार्किक एवं ऐतिहासिक प्रविधि के माध्यम से जानने की कोशिश की है। वास्तव में लगभग सभी उपन्यासों में स्थापित निष्कर्ष पौराणिकता एवं ऐतिहासिकता के रास्ते समकालीन सच्चाईयों को प्रकट करते हैं, एवं समाधान भी प्रस्तुत करते हैं।

सहायक प्रवक्ता, हिंदी, इंदिरा गांधी महाविद्यालय, कैथल

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

कोहली का लेखन साधारण पाठक के अनुभव–क्षेत्र, ज्ञान एवं अभिवृतियों को सबसे ज्यादा महत्त्व दे रहा है। उनके उपन्यास में मानव–सम्बन्धित समस्याओं को न केवल वर्णन किया गया है, बल्कि गहरा मूल्याकंन करके कुछ विशेष निष्कर्षो तक पहुचनें की कोशिश हुई है। मानव जीवन का कोई भी पक्ष ऐसा होगा जो उनके लेखन से अछुता रहा होगा। उन्होने सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों को इस तरह से छुआ कि सामान्य से सामान्य अध्ययनकर्ता भी इससे जुड़ता चला जाता है।

साहित्य को जीवन का प्रतिबिम्ब इसलिए कहा जाता है, क्योंकि उसमें जीवन के विविध रूपों का यथातथ्य अंकन हुआ करता है। कोहली ने इन मानव जीवन के विविध रूपों–सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक आयामों को ऐतिहासिक तथ्यों के साथ सम्बंधित करके उन्हे बहुत ही गहराईयों एवं सूक्ष्मता के साथ जाना है। इनसे प्राप्त निष्कर्षो को ही वे अपने अध्ययन एवं लेखन में सामने ला रहे हैं। इन सभी आयामों में स्थापित ज्ञान को वो न केवल परख रहे हैं, बल्कि नई परिभाषाऐं भी गढ़ रहे हैं।

कोहली के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन सम्बन्धित कईं आयाम उभर कर आ रहें हैं, विशेषरूप में कृषि एवं कृषक की बदहाली पर उन्होने गहन विचार किया है। वह कृषि–भूमि पर सांमतो के अवैध कब्जे से लेकर, किसान के जीवन में मौलिक आवश्यकताओं की भारी कमी, सामाजिक एवं आर्थिक भेद–भाव तथा बाल–श्रम तक के विषयों पर विचार करता है। यह एतिहासिक समालोचना समकालीन कृषक के जीवन की समस्याओं का सा आभास कराती प्रतीत होती है। इस शोध–पत्र में कोहली के उपन्यासों में कृषि एवं कृषक सम्बंधित विषयों को दिए गए महत्त्व का विवेचन किया गया है।

कृषि–व्यवस्था

विश्व में किसी भी काल में देखा जाए तो मानव, समाज एवं राष्ट्र–व्यवस्था के लिए धन एवं अर्थ–व्यवस्था की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अर्थ के लिए प्रबल आकर्षण की प्रवृति समूची मानव जाति की मूलभूत प्रवृति कही जा सकती है। चाहे पुरुष हो, चाहे नारी हो या समाज या राज्य, जब तक आर्थिक रूप से निर्भर नहीं होते, तब तक स्थिरता नहीं आती। प्राचीन काल में धन एवं अर्थ–व्यवस्था का मुख्य आधार कृषि–व्यवस्था एवं प्राकृतिक संसाधन ही होते थे। ज्यादातर जनसंख्या इससे सम्बंधित कार्यों से ही जीवन–यापन करती थी। लेकिन कृषि–व्यवस्था एवं किसान की स्थिति एवं दशा एवं स्वरूप वैसा ही था जैसा वर्तमान संदर्भो में व्यक्त किया जाता है। कोहली अपने उपन्यासों में इन सभी परिस्थितियों पर गहन चर्चा करते हैं, तथा यह विचार स्थापित करते हैं कि चिरकालीन बदलावों के बावजूद कृषि–व्यवस्था एवं किसान जीवन में कोई मुलभूत बदलाव नहीं आए हैं। उनके विचार के मुख्य बिन्दु निम्न रहे हैं।

किसान का बदहाल जीवन एवं आर्थिक भेद–भाव

कोहली अपने उपन्यासों में किसानों के बदहाल जीवन एवं उनके साथ हो रहे आर्थिक भेद–भाव को अपने अध्ययनों में विवेचन का मुख्य आधार बनाते हैं। वे बेनामी सम्पती एवं बेगारी जैसी समस्या को चिरकालिक मानते हैं। हर काल में किसान के साथ ये समस्याऐं किसी न किसी रूप में जुड़ी रही हैं। कोहली विभिन्न उद्धाहरणों के द्वारा इन विषयों पर विवेचन करता है।

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

'अभ्युदय–2: युद्ध'' उपन्यास में कोहली राज्य की आय तथा उसके स्त्रोतो के बारे में विचार कर रहे हैं। तार नामक पात्र सम्राट सुग्रीव को आर्थिक भेद–भाव के कारण बताता है। वह वर्णन करता है कि राज्य की ज्यादातर भूमि प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सभ्रांत वर्ग के कब्जे में है, जिससे भेद–भाव बढ़ा है। वह कहता है,

> 'सम्राट! जिन खेतों में धान उपजता है, वे यूथपति की संपति हैं। उसी प्रकार नारियल के वन किसी–न–किसी मंत्री, सांमत अथवा यूथपति की संपति हैं। पूरे यूथ द्वारा पकड़ी गयी मछलियों पर आधिपत्य यूथपति का होता है। जब तक यूथपति अपने यूथ का पालन पितावत करता था, तब तक बात और थी; किंतु क्रमशः संपति यूथ की न रहकर यूथपति की हो गई है और यूथ के सदस्य उसके दास हो गये हैं। वे यूथपति चावल, नारियल तथा मछलियां अधिकाधिक मात्रा में राक्षसों के हाथ बेच देते हैं और उसके स्थान पर बहुमूल्य वस्त्र तथा मदिरा प्राप्त करते हैं। परिणाम आपके सामने है – निर्धन प्रजा का पेट नहीं भरता तथा धनाढ्य वर्ग की रूपसियों के लिए, अपने असंख्य वस्त्रों में से पहनने के लिए, एक वस्त्र का चुनाव जीवन की सबसे बड़ी समस्या हो गया है।'[1]

'अभिज्ञान' उपन्यास में भी इस समस्या पर विचार करता है। सुदामा कृष्ण को किसान की बदहाली के बारे में बताता है। वह इस बात से सहमत होते हुए सुदामा को समझाता है,

> 'जब सोचने ही लगे हो तो केवल किसान तक ही मत रूको, गोपालों के विषय में भी सोचो, श्रमिको, जुलाहों, कर्मकरों और अन्य उत्पादकों के लिए भी सोचो,.....घरों में कार्य करती हुई, सबके लिए त्याग, बलिदान और श्रम करती, किन्तु पुरूषों के आधिपत्य में पिसती हुई नारियों के विषय में भी सोचो.....'[2]

कोहली किसानों के साथ–साथ कृषि–व्यवस्था से जुड़े अन्य कार्यक्षेत्रों में हो रहे शोषण एवं बदहाल जीवन की चर्चा करके इसे एक वर्ग सम्बंधी समस्या के रूप में उभारा है।

किसान एवं सामाजिक समानता

कोहली किसानों के बदहाल जीवन एवं उनके साथ हो रहे आर्थिक भेद–भाव के साथ सामाजिक समानता के प्रश्न को भी प्रमुखता से उठाते हैं। कोहली अपने उपन्यास 'अभ्युदयः सघर्ष की ओर' में भी सामाजिक समानता का प्रश्न उठाता है। राम भुधर नामक पात्र से उसके ग्रामीणों पर किए शोषण तथा आश्रम पर किए आक्रमण के बारे में पूछता है तो वह जवाब देता है,

> 'वे उन्हे सिखाते थे कि सब मनुष्य समान है। अब आप ही बताइये कि भू–स्वामी और भू–दास समान कैसे हो सकते हैं! कितनी मूर्खता की बात है न!.....आप ही बतायें कि आप अयोध्या के राजकुमार और आपका यह सैनिक क्या समान है?

बाल–श्रम

कोहली कृषक–वर्ग में व्याप्त बाल–श्रम पर भी चर्चा करता है। 'अभ्युदय–2: युद्ध'' उपन्यास में किसी भी समाज की तरह सुग्रीव के राज्य में भी गरीब परिवारों में बच्चें अपने अभिभावकों का आर्थिक कार्यो में हाथ बटवाते हैं। सुग्रीव सम्राट बनने के पश्चात् विभिन्न सुधार

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

करवाते हैं, वे शिक्षा–संस्थान भी खुलवाते हैं। वहां इस वर्ग के बच्चे शिक्षा ग्रहण करने नहीं आए, सुग्रीव हनुमान से इसके कारण विचार कर रहे हैं,

> 'उनमें से अधिकांश बालक–बालिकाएं अपनी सीमित क्षमता में असाध्य श्रम कर अपने परिवारों को चलाने में आर्थिक सहयोग करते हैं। कोई खेतों में काम करता है, कोई श्रमिकों के साथ उनकी सहायता करता है, कोई धनी परिवारों में घरेलू कार्य करता है। यदि ये निर्धन परिवार अपनी संतानो को अध्ययन के लिए शिक्षा–संस्थान में भेज देगें, तो उनकी आय की पूर्ति कैसे होगी?[3]

कोहली 'अभ्युदय–2: युद्ध'' उपन्यास में भी इस पर विचार करते हैं। सुग्रीव सम्राट बनने के पश्चात् हनुमान बाल–श्रम पर चर्चा करते हैं, हनुमान बताते हैं,

> 'मेरा प्रस्ताव है, सम्राट! हनुमान पुनः बोले, मैनें कुछ आर्य आश्रमों में देखा है कि ब्रहम्चारी आश्रम के खेतों में कृषि का कार्य करते हैं, गोशाला और अश्वशाला का काम करते हैं, कपड़ा बंनने के करघों पर काम करते हैं। '[4]

किसान एवं शिक्षा

कोहली गांव एवं वहां रहने वाले किसानो की शिक्षा के प्रति मनोदशा पर विचार करते है, उसके अध्ययन से स्पश्ट होता है कि शिक्षा एवं उससे सम्बधिंत शिक्षा–संस्थाएं गांव के विकास में सबसे ज्यादा महत्त्व रखती हैं। उनपर प्राचीन समय में भी ध्यान दिया जाता था, तथा ये वर्तमान की भी मौलिक आवश्यकताऐं हैं।

'अभिज्ञान' उपन्यास में सुदामा ग्राम–प्रमुख को गुरूकुल खोलने के लिए कहता है,

> 'मैं यह कहना चाहता था, जहां कहीं भी लोग रहते हैं, वहां उनके मानसिक विकास के लिए, उन्हे जीवन के उच्चतर धरातल से परिचित कराने के लिए, शिक्षा–संस्थाओं की आवश्यकता होती है। हमारे ग्राम और आसपास के ग्रामों में कोई पाठशाला अथवा गुरूकुल नहीं है। क्यों न हम यहां एक अच्छे गुरूकुल की स्थापना करें?'[5]

कोहली अपने उपन्यास 'अभ्युदयः सघर्ष की ओर' में भी में कोहली जब ग्राम–प्रमुख से जवाब दिलवाते है तो ऐसा महसुस होता है, मानो वो वर्तमान किसान के शिक्षा के प्रति सोच पर चर्चा कर रहे हों। ग्राम–प्रमुख कहता है,

> 'हमारे प्रजाजन या तो खेती करते हैं या व्यापार। तुम बताओ कि तुम्हारे दर्शन, काव्य और व्याकरण से उन्हे क्या लाभ होगा। उनकी उपज में वृद्धि होगी या उनके व्यापार का विकास होगा,.....जो लड़का तुम्हारे दर्शन, काव्य और व्याकरण पढ़ लेता है, वह केवल ग्रन्थों का उत्पादन करता है.....वह अपने पशुओं की सेवा के स्थान पर विद्वानों की सेवा करता है। दुकान पर बैठकर माल बेचने की बदले, वह किसी गोष्ठी में बैठकर विचारें का आदान–प्रदान करने लगता है.....
> ...तुम्हारी विद्या हमारे किसी काम की नहीं हैं.....यह तो ग्राम–विरोधनी है। ऐसी विद्या या तो नगरों के काम की है, या वन्य–आश्रमों के काम की.....हां! खेती और व्यापार की सुचारू व्यवस्था देने की कोई शिक्षा हो तो हमसे बात करो।'[6]

राज–व्यवस्था का ग्रामीण जनता के प्रति उत्तरदायित्व

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

कोहली अपने उपन्यास 'महासमर' में राज–व्यवस्था का ग्रामीण जनता के प्रति उत्तरदायित्व एवं राजधर्म को स्पष्ट करता है। शान्तनु के माध्यम से देवव्रत को कहलवाता है,

> 'पितृवत् प्रजा का पालन करने के लिए कुछ उदार होना पड़ता है पुत्र! उसके सुख–दुख में, उसके साथ चलना पड़ता ह। समृद्धि के समय उससे कर उगाहा जाता है तो विपत्ति के समय उस पर व्यय भी किया जाता है। वैसे भी राजा का धन अपने भोग के लिए कम, प्रजा के सुख के लिए अधिक होता है पुत्र!'[7]

उपन्यास 'तोड़ो कारा तोड़ो' में भी कोहली राज–व्यवस्था के ग्रामीण जनता के प्रति उत्तरदायित्व एवं राजधर्म को स्पष्ट करता है। इसमें नरेन्द्र अपने साथियों के साथ नाटक में भाग लेता है। उस नाटक में प्रयुक्त तार्किकता इसको स्पष्ट करने के लिए उपर्युक्त मानी जा सकती है। प्रस्तुत प्रंसग को देखिए–

> 'महामन्त्री ने दोनों हाथ जोड़कर, झुककर प्रणाम किया और बोला, 'महाराज! आज कुछ प्रजाजन आपसे भेंट करने आए हैं। वे चाहते हैं कि आप उनके उपहार स्वीकार करें।
>
> नरेन्द्र ने ओजस्वी स्वर में पूछा, 'वे उपहार देने आए हैं अथवा भेंट करने?'
>
> 'महाराज! वे आपको उपहार देने के बहाने मिलना चाहते हैं,' महामन्त्री ने कहा, 'ताकि वे अपने कष्ट कह सकें।
>
> नरेन्द्र का स्वर कठोर हो गया, महामन्त्री! हमारे राज्य में ऐसा अंधेर कैसे हो रहा है?प्रजा हमें 'कर' देती है ताकि हम उसका पालन–पोषण और रक्षा करें, फिर अपना दुःख कहनें के लिए उपहार क्यों लाने पड़ते हैं? यदि 'कर' लेने के पश्चात् भी राजा उनकी रक्षा नहीं करता, तो राजा राजा नहीं, दस्यु है।[8]

कोहली इसके माध्यम से वर्तमान व्यवस्थाओं के लिए यह एक खुला प्रश्न छोड़ता है कि आवश्यकता पड़ने पर ग्रामीण जनता की सरकार द्वारा सदा सहायता की जानी चाहिए। सरकार का निर्माण हुआ ही इसलिए है कि वह सामूहिक रूप में वह भूमिका निभाऐ जो अकेले व्यक्ति नही निभा पाते। सरकार एक लोगो के समूह का प्रतिनिधि ही होती है। कोहली का यह विचार **'समृद्धि के समय उससे कर उगाहा जाता है तो विपत्ति के समय उस पर व्यय भी किया जाता है'** सरकार का जनता एवं विशेषरूप से कर्षक–वर्ग के प्रति उत्तरदायित्व को स्पष्ट करने के लिए काफी है।

नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में मानव जीवन के सभी पक्षों पर गहन विचार हुआ है। ग्रामीण–जीवन को भी गहन रूप से विश्लेशित किया गया है। उनके अध्ययन का क्षेत्र वास्तव में ऐतिहासिक राज–व्यवस्थाऐं ही रही हैं, जिनका विश्लेशण करते–करते कोहली वास्तव में समकालीन मानव जीवन के सभी पक्षों को भी तोलते हैं। कोहली के उपन्यासों में कृषि एवं किसान के जीवन को बार–बार अध्ययन के विषय के रूप में उठाया गया है। उनके लगभग सभी अध्ययनों में कृषि एवं किसान का वर्णन किसी न किसी रूप में अवश्य हुआ है। कोहली उनके जीवन में रोजगार, इससे सम्बंधित शिक्षा, अर्थव्यवस्था और उसमें उनके शोषण के साधनों पर गहन शोध के आधार पर अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके अलावा आर्थिक वर्ग–भेद एवं बाल–श्रम

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

जैसी समस्याओं पर उनका विश्लेषण समकालीन प्रभावों को संजीदा कर देता है। अध्ययन पश्चात् ऐसा लगता है, मानो, वो वर्तमान हालातों की चर्चा कर रहे हों।

सन्दर्भ सूची

1. **नरेन्द्र कोहली**, **'अभ्युदय–2 : युद्ध',** नई दिल्ली, 1998, पृ.स. 100.
2. ....., **'अभिज्ञान',** राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, 2010, पृ.स. 119.
3. ....., **'अभ्युदय–2 : युद्ध',** नई दिल्ली, 1998, पृ.स. 99.
4. .....,वही, पृ.स. 99.
5. ....., **'अभिज्ञान',** राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, 2010, पृ.स. 37.
6. ....., वही, पृ.स. 39–40.
7. ....., **'महासमर–1' बन्धन',** वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1988, पृ.स. 109.
8. ....., '**तोड़ो कारा तोड़ो',** नयी दिल्ली, किताबघर, 2002, पृ.स. 76.